पाठ - 6
हबशा की ओर हिजरत

الدرس السادس - هندي
الهجرة إلى الحبشة

जिन लोगों के इस्लाम का मामला स्पष्ट हो जाता। जो कमज़ोर होते, मुश्रिकीन उन्हें बराबर कष्ट व यातनाएं देते रहते थे। यह देख कर सहाबा ने अपने दीन के साथ हबशा के शाह नजाशी के पास हिजरत कर जाने की इजाजत चाही, इस उम्मीद पर कि उसके पास सुख शान्ति का जीवन गुजार सकेंगे, खास तौर पर तब जबकि बहुत से मुसलमानों को कुरैश से अपनी जान व माल का खतरा पैदा हुआ तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको हिजरत की इजाज़त दे दी। यह नबी बनाए जाने के पांच साल बाद की बात है।

इस अवसर पर लगभग सत्तर मुसलमानों ने अपने घर वालों के साथ हिजरत की जिनमें उसमान रजियल्लाहु अन्हु , उनकी पत्नी रुक़य्या बिन्त मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी थीं। कुरैशियों ने वहां भी अर्थात हबशा में भी उनके रहने सहने को खतरे में डालने की भरपूर कोशिश की। उन्होंने बादशाह की सेवा में तोहफ़े भेजे और उससे मांग की कि इन भगौड़ों को उनके हवाले कर दे और उससे कहा कि मुसलमान ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी मां को गालियां देते हैं। जब बादशाह ने मुसलमानों से इस बाबत मालूम किया तो उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम के बारे मे कुरआन जो कहता है उन सारी चीज़ों को पेश कर दिया और हक़ को पूरे तौर पर बयान कर दिया और उसके सामने सूरह मरयम की तिलावत की। अतएव शाह नजाशी ने मुसलमानों को अमान प्रदान की और उन्हें मुश्रिकों के हवाले करने से इन्कार कर दिया और वह स्वयं ईमान की दौलात से मालामाल हुआ और अपने इस्लाम लाने का एलान कर दिया।

इसी साल रमज़ान के महीने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरम में लोगों के बीच तशरीफ़ ले गए और उनके बीच खड़े होकर सूरह नजम की तिलावत करने लगे। वहां कुरैश के लोगों की एक बड़ी जमाअत मौजूद थी। उन काफ़िरों ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुरआन न सुनने की अपनी लगातार वसीयत व नसीहत की वजह से इससे पहले कुरआन करीम की तिलावत कभी नहीं सुनी थी, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूरह की उनके सामने तिलावत की और अल्लाह का कलाम उनके कानों से टकराया तो उनमें से हर व्यक्ति इसे ध्यान से सुनने लगा, उस समय उनके दिल में इसके सिवा कोई दूसरा विचार नहीं था। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आयते करीमा فَاسْجُدُوا لِلهِ وَاعْبُدُوا की तिलावत की तो आपने सज्दा किया और फिर ग़ैर इख़्तियारी तौर पर सारे लोग सज्दे में गिर पड़े।

कुरैश के लोग बराबर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत का विरोध करते रहे और इस सिलसिले में उन्होंने विभिन्न साधनों का इस्तेमाल भी किया। उन्होंने मुसलमानों को यातनाएं दीं, तरह तरह से परेशान किया धमकियां दीं और तरह–तरह का लालच भी दिया। लेकिन इसके बावजूद मुसलमानों ने दीन के दामन को और अधिक मज़बूती से थामा और इस्लाम लाने वालों की तादाद बढ़ती ही गयी। उन्होंने इस्लाम के विरोध का एक नया तरीक़ा अपनाया और वह यह है कि एक सहीफ़ा लिखा और सारे लोगों ने उस पर दस्तख़त किए और उसे काबे के अन्दर लटका दिया। उन लोगों ने इसमें मुसलमानों और बनू हाशिम से पूरे तौर पर सामाजिक बायकाट करने की सन्धि की। अतएव उनके साथ खरीद व फरोख्त, शादी विवाह, सहयोग और किसी भी तरह का मामला नहीं किया जा सकता था।

इसकी वजह से मुसलमान मक्का से निकल कर एक घाटी ''शेअबे अबू तालिब में जाने पर मजबूर हो गए। वहां मुसलमानों को सख्त मुसीबतों से दो चार होना पड़ा और वे भूख व तंग दस्ती से दो चार हुए। मालदार लोगों ने अपना सारा माल खर्च कर दिया। खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने भी अपना पूरा माल खर्च कर दिया और उनके बीच बीमारियां फैल गयीं और उनमें से बहुत से लोग मौत के किनारे पर पहुंच गए, लेकिन वे लोग जमे रहे और सब्र करते रहे और उनमें से एक आदमी भी दीन इस्लाम से अलग नहीं हुआ। यह पाबन्दी तीन सालों तक क़ायम रही यहां तक कि कुछ कुरैशी लोग उठे जिनकी बनू हाशिम से रिष्तेदारियां थी और सहीफे में दर्ज सन्धि को तोड़ दिया और लोगों के बीच इस बात का एलान कर दिया। जब कुरैश के लोगों ने सहीफ़े को निकाला तो देखा कि दीमक उसे खा गयी थी और ''बिइस्मिक अल्लाहुम्म के सिवा उसमें कुछ भी बाक़ी नहीं था। इस तरह से मुसलमानों को मुसीबत से नजात मिली और मुसलमान बनू हाशिम मक्का वापस लौट आए लेकिन फिर भी कुरैश के लोग मुसलमानों की दुश्मनी पर बराबर जमे रहे।